



## ॥ भगवान विश्वकर्मा की आरती ॥

ॐ जय श्री विश्वकर्मा, प्रभु जय श्री विश्वकर्मा ।  
सकल सृष्टि के कर्ता, रक्षक स्तुति धर्मा ॥ 1 ॥  
ॐ जय श्री विश्वकर्मा, प्रभु जय श्री विश्वकर्मा ।  
आदि सृष्टि में विधि को, श्रुति उपदेश दिया ।  
जीव मात्र का जग में, ज्ञान विकास किया ॥ 2 ॥  
ॐ जय श्री विश्वकर्मा, प्रभु जय श्री विश्वकर्मा ।  
ऋषि अंगिरा ने तप से, शांति नहीं पाई ।  
ध्यान किया जब प्रभु का, सकल सिद्धि आई ॥ 3 ॥  
ॐ जय श्री विश्वकर्मा, प्रभु जय श्री विश्वकर्मा ।  
रोगग्रस्त राजा ने जब आश्रय लीना ।  
संकट मोचन बनकर, दूर दुःख कीना ॥ 4 ॥  
ॐ जय श्री विश्वकर्मा, प्रभु जय श्री विश्वकर्मा ।  
जब रथकार दंपति, तुम्हारी टेर करी ।  
सुनकर दीन प्रार्थना, विपत्ति हरी सगरी ॥ 5 ॥  
ॐ जय श्री विश्वकर्मा, प्रभु जय श्री विश्वकर्मा ।  
एकानन, चतुरानन, पंचानन राजे ।  
द्विभुज, चतुर्भुज, दशभुज, सकल रूप साजे ॥ 6 ॥  
ॐ जय श्री विश्वकर्मा, प्रभु जय श्री विश्वकर्मा ।  
ध्यान धरे जब पद का, सकल सिद्धि आवे ।  
मन दुविधा मिट जाए, अटल शांति पावे ॥ 7 ॥  
ॐ जय श्री विश्वकर्मा, प्रभु जय श्री विश्वकर्मा ।  
श्री विश्वकर्मा जी की आरती जो कोई जन गावे ।  
कहत गजानंद स्वामी, सुख-संपत्ति पावे ॥ 8 ॥  
ॐ जय श्री विश्वकर्मा, प्रभु जय श्री विश्वकर्मा ॥

और भी आरती व चालीसा देखने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें:

<https://bhaktimargdarshan.com/>

हम आशा करते हैं कि यह सामग्री आपके लिए उपयोगी रही होगी ।  
अगर आपको यह पसंद आई हो, तो इसे अपने परिवार और मित्रों के साथ जरूर साझा करें ।

**Bhakti Margdarshan**

